अणुव्रत गीत
(बदले युग की धारा)

रचनाकार - आचार्य तुलसी

बदले युग की धारा
नई दृष्टि हो नई सृष्टि हो अणुव्रतों के द्वारा,
बदले युग की धारा।

मानवीय मूल्यों की रक्षा अणुव्रत का आशय है,
आध्यात्मिकता प्रामाणिकता उसका अमल हृदय है।
हिंसा के इस गहन तिमिर में अणुव्रत एक उजारा।।
बदले युग की धारा।।

धार्मिक है, पर नहीं कि नैतिक बहुत बड़ा विस्मय है,
नैतिकता से शून्य धर्म का यह कैसा अभिनय है?
इस उलझन का धर्म-क्रान्ति ही है कमनीय किनारा।।
बदले युग की धारा।।

मूल्यपरक शिक्षा के युग में संयम का अंकन हो,
सत्य अहिंसा से आप्लावित जन-जन का जीवन हो।
भोगवाद के चक्रवात से सहज मिले छुटकारा।।
बदले युग की धारा।।

व्यक्ति बनेगा स्वस्थ तभी तो स्वस्थ समाज बनेगा,
सघन स्वार्थ की मूर्च्छा का उपचार अणुव्रत देगा।
प्रकटे अब परमार्थ चेतना, उपकृत हो जग सारा।।
बदले युग की धारा।।

बढ़े प्रबल पुरुषार्थ, सभी में अभिनव आस्था जागे,
जोड़े सबके अन्तर मानस को करुणा के धागे।
'तुलसी' मैत्री मंत्र अचल हो, नभ में ज्यों ध्रुवतारा।।
बदले युग की धारा।।